शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2013

सम्पादकीय

शब्द-शक्ति

दुनिया की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि समझी जाने वाली देवनागरी लिपि में श्रेष्ठ आध्यात्मिक साहित्य की रचना हुई, वहीं दूसरी ओर सर्वाधिक अवैज्ञानिक रोमन लिपि में दुनिया के आधुनिकतम विज्ञान की खोजों को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई। अंग्रेजी भाषा रोमन लिपि में लिखी जाती है, जबकि भारत देश की भाषाओं की जननी संस्कृत की लिपि देवनागरी है। भारत देश की सांस्कृतिक एकता और अखंडता संस्कृत भाषा और देवनागरी लिपि के कारण ही संभव हो पाई। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक एक ही भाषा में साहित्य रचना हमारे ऋषि-मुनियों के महापराक्रम के कारण ही संभव हुई। उनकी दृष्टि में विश्व से कम कुछ नहीं था। तभी तो उनके मुख से मंत्र निःसृत हुआ 'विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन अनातुरम्'। वास्तव में संस्कृत प्राणिमात्र की मुक्ति की भाषा है जबकि अंग्रेजी बंधनों में डालने वाली है। हमारी शिक्षा का अंतिम ध्येय 'सा विद्यया विमुक्तये' है, जबकि वैज्ञानिक खोजों ने समाज में परिग्रह वृत्ति को बढ़ावा दिया है। इस बारे में शब्द-ब्रह्म के साधक संत विनोबा का कहना है कि हम जिन शब्दों का उपयोग करते हैं, वे अधिकतर संस्कृत भाषा के हैं। संस्कृत के शब्द जैसे हमसे बोलते हैं, वैसे हिंदी, मराठी, अंग्रेजी या अन्य किसी भाषा के शब्द नहीं बोलते। 'उद्यान' शब्द लें। साधारण बगीचा उद्यान नहीं है। 'उद्यान' यानी उद+यानम - शहर से जरा दूर, ऊंचे स्थान पर बना हुआ बाग। 'चित्र' को देखें! 'पिक्चर', 'तस्वीर', ये शब्द तो कुछ बोलते नहीं, चुप हैं। पर चित्र ? यानी 'चित्' को रमानेवाला, चैतन्य को रमानेवाला। संस्कृत भाषा में शब्द-शक्ति बहुत पहले प्रकट हुई। अंग्रेजी भाषा में लाखों शब्दों का संग्रह है। परंतु केवल शब्द-संग्रह से शक्ति प्रकट नहीं होती। एक-एक यंत्र में असंख्य पुर्जे होते हैं। एक-एक का अलग-अलग नाम होता है। इस तरह एक-एक यंत्र में दस-दस, पचास-पचास शब्दों का उपयोग होता है। परंतु ऐसे शब्द-भंडार से शब्द-शक्ति बढ़ती है ऐसा नहीं। वह तो ऐसा है, जितना जीवन में परिग्रह बढ़ेगा, कचरा बढ़ेगा, उतने शब्द बढ़ेंगे। वह तो शब्दों का ढेर ही होगा। उससे विचार-संपदा बढ़ती नहीं। वैसे देखा जाये तो अंग्रेजी में भी विचार-संपदा बहुत है। फिर भी संस्कृत में हम जो शब्द की महिमा देखते हैं, वह महिमा वहां नहीं है। पचास नयी-नयी चीजें बनेंगी, तो पचास नये शब्द उनके लिए होंगे। परंतु ऐसे शब्द-संग्रह से व्यर्थ परिग्रह हो जाता है।

परंतु संस्कृत में हम क्या देखते हैं ? संस्कृत में विचार के प्रतिनिधि के तौर पर शब्द बनाये हैं। जैसे पृथ्वी, जमीन शब्द है। अंग्रेजी में कहते हैं 'अर्थ', लैटिन में कहेंगे 'टेरा'। लेकिन संस्कृत में पृथ्वी के लिए पचास शब्द मिलते हैं। 'पृथ्वी' यानी फैली हुई। 'धरा' यानी धारण करने वाली। 'भूमि' यानी तरह-तरह के पदार्थों को जन्म देने वाली। 'गुर्वी' यानी भारी, वजनदार, 'उर्वी' यानी विशाल, 'क्षमा' यानी सहन करने वाली। इस तरह एक-एक शब्द एक-एक गुणवाचक है। संस्कृत शब्दों में विचार भरा है, इस वास्ते हर एक शब्द हमसे बात करता है। वैसा अंग्रेजी शब्द बात नहीं करता। 'वाटर' शब्द हमसे बात नहीं करता। लेकिन संस्कृत शब्द हमसे बात करने लगता है। पयः - पोषण करने वाला। पानीयम्- तृप्त करने वाला। उदक- अंदर से बाहर आया हुआ। 'समुद्रम' यह छोटा-सा शब्द दीखता है, लेकिन वह बात करता है। 'सम' यानी चारों तरफ समान रूप से फैला हुआ। 'उद्' ऊंचा उठा हुआ, ऊंचा आया हुआ पानी। 'रम्' यानी आल्हाददायक, खेल रहा है, आनंद देता है। तो 'समुद्रं' यानी सम+उद्+रम्। समुद्रात् ऊर्मिः मधुमां उदारत् - वेद ने कहा है। - इस हृदय में समुद्र के समान

असंख्य भावनाएं उठती हैं। यह हृदय यानी समुद्र ही है। 'सी' कहेंगे तो क्या होगा ? एक पदार्थ ! वह शब्द बोलता नहीं, मूक है। 'दुग्धम'-दोहन किया हुआ, साररूप। 'घृतम्'- अत्यंत पवित्र, निर्मल, कचरा निकला हुआ। घृतं में चक्षुः। विश्वामित्र बोल रहे हैं - मेरी आंख यानी घी है। किसी अंग्रेजी या दूसरी भाषा में यह नहीं देखा कि कोई कहे, मेरी आंख घी है। 'अग्नि' यानी फायर। फायर कहने से कुछ नहीं हुआ ? कुछ नहीं। लेकिन 'अग्नि' कहने से अंजनात् अग्निः, रूप प्रकट हो गया, व्यक्त हो गया। 'वह्निः' वाहक है, ले जाता है, संदेशवाहक है। यज्ञ में आहुत डालते हैं, तो वह अग्नि आपकी भक्ति, ऊपर भगवान के पास पहुंचाता है। तो 'अग्निमिळे पुरोहितम्' के बदले 'वह्निमिळे पुरोहितम्' नहीं चलेगा। इस तरह एक-एक शब्द का विशेष महत्व है। संस्कृत में एक-एक शब्द का व्यक्तित्व है। संस्कृत का शब्दकोश भी काव्य है। एक शब्द की कितनी तरह से व्युत्पत्ति होती है ! एक शब्द के अनेक अर्थ और अनेक अर्थ का एक शब्द। इसलिए संस्कृत में निर्मलता का वाक्-प्रकाशन जितना होता है, उतना शायद ही किसी दूसरी भाषा में होता होगा! इस प्रकार की शब्द-शक्ति भारत में है। इस पर अभी तक ध्यान नहीं गया। हम अभी तक इसी बात पर उलझे हुए हैं कि इस देश के 121 करोड़ लोगों को अंग्रेजी भाषा कैसे सिखा दी जाए। हमारे देश के कर्णधार औपनिवेशिक मानसिकता से ग्रस्त होकर अंग्रेजी की हिमायत करते दिखाई देते हैं। वे जार्ज बर्नार्ड शा की बातों को भूल जाते हैं। मरने से पहले बर्नार्ड शा ने एक न्यास बनाते हुए कहा कि मैं जो पैसा जमा कर रहा हूं उससे अंग्रेजी भाषा की लिपि में सुधार किया जाए। उन्होंने एक उदाहरण दिया जो बहुत प्रसिद्ध है। बर्नार्ड शा कहते हैं कि मैं लिखूं 'घोटी' GHOTI और आप उसको पढ़ें फिश - FISH तो भी मैं आपको कुछ नहीं कह सकता। मैं आपको गलत नहीं कह सकता। इसकी व्याख्या करते हुए वे कहते हैं - इनफ (enough), रफ (rough), गफ (gough), टफ (tough) में जीएच (gh) आता है। इनमें (gh) का उच्चारण 'फ' (f) होता है। अतः (ghoti) के जीएच 'घ' का उच्चारण हम 'फ' करें तो फिश का पहला अक्षर 'फ' बन गया। इसके बाद व आता है। जैसा कि आपको पता है Women का शुद्ध अंग्रेजी उच्चारण 'वीमेन' है अर्थात इसमें 'ओ' का उच्चारण 'इ' हुआ। याने 'घो' की जगह 'फि' बन गया। अब 'घोटी' का टीआई शेष बचा। 'नेशन' (nation) , स्टेशन (station) आदि में टीआई का उच्चारण 'श' होता है। अतः 'घोटी' के 'टीआई' का उच्चारण हो गया 'श'। 'फि' (gho) में अगर 'श' (ti) मिलाएंगे तो क्या बनेगा ? फिश। घोटी याने फिश और फिश याने घोटी। इस प्रकार यदि मैं लिखता हूं GHOTI और आप पढ़ते हैं FISH और आप बोलते हैं FISh और मैं लिखता हूं GHOTI तो आप मुझे कुछ नहीं कह सकते। ऐसी अवैज्ञानिक लिपिवाली भाषा से देश का क्या भला होगा ? सूचना प्रौद्योगिकी ने भाषा के बंधन को बहुत हद तक ढीला कर दिया है। आज कम्प्यूटर न सिर्फ हिन्दी भाषा की शुद्धता का आग्रह करता दिखाई दे रहा है, बल्कि यदि अंग्रेजी के शब्दों को इंटरनेट, ईमेल अथवा वेबसाइट पर देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों अंग्रेजी के हिज्जे के अनुसार लिखने जाएंगे तो वह कुछ का कुछ हो जाता है। हमें सही शब्द लिखने के लिए देवनागरी उच्चारण की सहायता लेना ही पड़ती है। इस आधार से यदि भविष्य में अंग्रेजी के हिज्जे उच्चारण जैसे ही लिखे जाने लगे तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय के लिए यह आवश्यक है कि जैसा बोला जाए वैसा ही लिखा जाए और जैसा लिखा जाए वैसा ही बोला जाए। इसमें देवनागरी लिपि मदद के लिए सदैव तैयार है।

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे